

जिसने रमज़ान में कुछ दिनों का रोज़ा
तोड़ दिया जिनकी संख्या उसे याद नहीं

﴿ من أفطر أيامًا في رمضان لا يعلم عددها ﴾

[हिन्दी - Hindi - ہندی]

अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ रहिमहुल्लाह

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

Islamhouse.com

﴿ من أفطر أيامًا في رمضان لا يعلم عددها ﴾

« باللغة الهندية »

سماحة الشيخ العلامة عبد العزيز بن عبد الله بن باز

رحمه الله

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

IslamHouse.com



बिस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

जिसने रमज़ान में कुछ दिनों का रोज़ा तोड़

दिया जिनकी संख्या उसे याद नहीं

प्रश्न:

मैं ने एक साल माहवारी के दिनों में रोज़ा तोड़ दिया और अभी तक उन दिनों का रोज़ा नहीं रख सकी हूँ। इस पर कई वर्ष बीत चुके हैं। मेरे ऊपर रोज़ों का जो कर्ज़ है मैं उसका भुगतान करना चाहती हूँ। लेकिन मुझे यह ज्ञात नहीं कि मेरे ऊपर कितने दिनों के रोज़े बाकी हैं। इस स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए ?

उत्तर:

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है। तथा अल्लाह के पैगंबर पर दया और शांति अवतरित हो।

अल्लाह की प्रशंसा और गुणगान तथा दरुद व सलाम के बाद !

आपके ऊपर तीन चीजें अनिवार्य हैं :

पहली :

इस विलंब पर अल्लाह से तौबा करना, इस से पहले जो लापरवाही हुई है उस पर पश्चाताप प्रदर्शन करना और पुनः ऐसा न करने का सुदृढ़ संकल्प करना। क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾ [النور: ٤١]

“ऐ ईमान वालो (मुसलमानो)! तुम सब के सब अल्लाह के समक्ष तौबा करो ताकि तुम सफलता पाओ।” (सूरतुन-नूर : 31)

यह विलंब अल्लाह तआला की अवज्ञा और नाफरमानी है, अतः इस से अल्लाह के समक्ष तौबा करना अनिवार्य है।

दूसरी :

अपने गुमान और अनुमान के अनुसार रोज़ा रखने में जल्दी करना। अल्लाह तआला किसी प्राणी को उसकी क्षमता और शक्ति से अधिक भार नहीं डालता। अतः आप ने अपने अनुमान में जितने दिनों का रोज़ा तोड़ दिया था, उतने दिनों की आप क़ज़ा करें। अगर आप का अनुमान है कि वे दस दिन हैं, तो आप दस दिनों का रोज़ा रखें, और अगर आप का अनुमान यह है कि वे इस से कम या अधिक हैं तो आप अपने अनुमान (गुमान) के अनुसार रोज़ा रख लें। क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا﴾ [البقرة: ٢٨٦]

“अल्लाह तआला किसी प्राणी पर उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं डालता।” (सूरतुल बकरा: 286)

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ﴾ [التغابن: १६]

“अतएव अपनी यथा शक्ति अल्लाह से डरते रहो।” (सूरतुत्-तगाबुन: 16)

तीसरी :

हर दिन के बदले एक गरीब को खाना खिलाना, यदि आप इस पर सक्षम हैं। पूरा खाना एक ही गरीब को भी दिया जा सकता है। यदि आप गरीब और निर्धन हैं, खाना खिलाने पर सक्षम नहीं हैं, तो आप पर रोज़ा रखने और तौबा करने के अलावा और कुछ भी अनिवार्य नहीं है। प्रत्येक दिन के बदले शहर के प्रमुख ख़ूराक से आधा ‘साअ’ की मात्रा में खाना खिलाना अनिवार्य है। और वज़ (तौल) से इसकी मात्रा देढ़ किलो ग्राम (1.5 kg) है। यह उस व्यक्ति पर है जो इसकी ताक़त रखता है।

और अल्लाह तआला ही तौफीक़ देने वाला (शक्ति का स्रोत) है।

देखिये : समाहतुशैख अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ रहिमहुल्लाह की किताब "मजमूओ फतावा व मक़ालात मुतनौविआ" (१५/३४२).